IJESRR
International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org Volume-1, Issue-5 October - 2014 Email- editor@ijesrr.org

जनपद गाजियाबाद के ग्रामीण एवं शहरी, दोनों क्षेत्रों में पोषण जनित रोगों का भौगोलिक विश्लेषण

Vijeta Nehra
M.A. Final Year
Shri Venkateshwara University Gajraula,
Amroha

सार–

उत्तम पोषण उत्तम स्वास्थ्य का जनक है। पोषक तत्त्व ही शरीर की सामान्य वृद्धि एवं विकास के आधार हैं। पोषक तत्त्वों के आधार पर यह ही उत्तम, स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य विचार शील जीवन जिया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के विटामिन्स की खोज के बाद विज्ञान ने पुनः विज्ञान ने पोषण विज्ञान का आविष्कार किया है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद प्रोटीन पर खोज करने पर उपरोक्त तथ्य संज्ञान में आया। वैज्ञानिकों ने गत वर्षों में पोषक तत्त्वों एवं स्वास्थ्य को बहुत करीब से परखने की कोशिश की एवं इस ओर विशेष ध्यान दिया।

प्रस्तावना

इस क्षेत्र का भौतिक स्वरूप साधारण है एवं इसके उच्चावच में उत्तर से दक्षिण की ओर सामान्य ढाल है। सम्पूर्ण पृष्ट प्रदेश नदियों द्वारा लाई हुई (एल्युनियल) मिट्टी का बना है। इस क्षेत्र में भी प्रमुख नदियां गंगा, यमुना, हिन्डन, काली एवं सहायक नदियां हैं। ये सारी नदियां मल ढाल के कारण एक–दूसरे समानान्तर एवं तंग रास्तों से गुजरती है। नदियां घुमावदार मोड़ बनाती है एवं प्रति वर्ष पृष्ट प्रदेश में उपजाऊ मिट्टी फैलाती रहती है। नदियों के पृष्ट क्षेत्रों में गो–खुर झील एवं विभिन्न प्रकार के जल भराव के दृश्य देखने को मिलते हैं। जो अक्सर गर्मियों में सूख जाते हैं। परन्तु वर्षा ऋतु में नदियां अपने तट बंध तोड़ कर दूर–दूर तक फैल जाती हैं एवं बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जिसका कुप्रभाव खेतीहर भूमि पर पड़ता है।

नदियों द्वारा जमा की गई मिट्टी के आधार पर पृष्ट प्रदेश को (1) खादर एवं (2) बाँगा नाम के दो भागों में विभाजित किया गया है। खादर में मुख्य नदियों एवं सहायक नदियों द्वारा जमा की गई मिट्टी बलुई, चिपचिपी एवं हल्के सलेटी रंग की होती है तथा इस मिट्टी में कृषक को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, यह उपजाऊ होती है। बाँगर में पुरानी एल्युनिमल मिट्टी भी खेती करते–करते उर्वरा शक्ति घटती जा रही है एवं इसकी सिंचाई करने की आवश्यकता होती है। यह मिट्टी दोमट मिट्टी का रूप धारण कर गई है। इसका रंग कालेपन पर होता है।

यह जनपद स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम स्वास्थ्यवर्द्धक जनपद माना जाता है। अन्य जनपदों की तुलना में इस जनपद में मृत्यु–दर कम है। यहाँ भी जलवायु शुष्क है, परन्तु तीन ऋतुएं मुख्य हैं– (1) शीत ऋतु (2) ग्रीष्म ऋतु एवं (3) वर्षा ऋतु। शीत ऋतु में दिसम्बर एवं जनवरी वर्ष के ठंडे महीने होते हैं, जिनका तापमान क्रमशः 14.5^0 सैलशियस एवं 13.5^0 सैलशियस रहता है। गर्मी का मौसम काफी गर्म होता है। मई एवं जून में तापक्रम 32.6^0 सैलशियस रहता है। शीत ऋतु में वर्षा दिसम्बर तथा जनवरी माह में लगभग 5 से०मी० से 15 से०मी० के मध्य होती है जो कम मानी जाती है। लेकिन ग्रीष्म ऋतु के मार्च से जून माह के अन्त तक मौसम लगभग शुष्क रहता है, कभी–कभी एक या दो हल्की बौछार हो जाती है। जून के अन्तिम सप्ताह से सितम्बर माह के अंत तक वर्षा ऋतु होती है तथा सम्पूर्ण वर्ष भी लगभग 90 प्रतिशत वर्षा इन्हीं महीनों में होती है। जो यहाँ की कृषि के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होती है। परन्तु वर्षा का होना निश्चित नहीं है यह कभी अगस्त में शुरू होती है कभी जौलाई में शुरू होकर मध्य के महीनों में बन्द हो जाती है। वर्षा की अनिश्चितता के साथ–साथ इसकी मात्रा भी अनिश्चित है। इसका जनपद की कृषि पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

विस्तार एवं स्थिति पुठा–हुसैनपुरः

पुठा–हुसैनपुर लगभग 369 एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। यह $77^0 44'$ पूर्व देशान्तर एवं $26^0 44'$ अक्षांश पर स्थित है, इसके उत्तर में अछेजा एवं सबली गाँव स्थित हैं एवं दक्षिण में पूठी रफरपुर–तुम्बडैल गाँव इसकी सीमा बनाते हैं। इसके पूर्व में रामपुर एवं पश्चिम में रघुनाथपुर गाँव बसे हुए हैं। यह गाँव दोमट मिट्टी के समतल क्षेत्र पर बसा है। धरातल का ढ़ाल बहुत मन्द है। क्षेत्र के अन्य चुने हुए गाँवों से इस गाँव की मिट्टी उर्वरा शक्ति अधिक है।

Copyright@ijesrr.org

पूरब मौसम में पानी का स्तर 18 से 27 मी० के मध्य रहता है। जबकि वर्षा की ऋतु में यह धरातल से केवल छः मीटर ही रह जाता है।

जलवायु:

वर्षा ऋतु में भू–उपयोग की प्रवृत्ति यानि भूमि का उपयोग किन–किन फसलों के लिए किया जाता है, यही मुख्य बात है। कितने भाग पर कौन–सी फसल बोई जाती है तथा वर्षा का किस फसल पर क्या प्रभाव पड़ता है। गाँव में वर्षा सम्बन्धी आँकड़ों का चयन करने सम्बन्धी सुविधा न होने पर शोधकर्ता ने हापुड़ मुख्यालय से ही आँकड़ों को प्राप्त किया। वर्षा सम्बन्धी आँकड़ों का प्रदर्शन सारिणी नं० 1 में किया गया है।

सारिणी नं० 1

खरीफ फसल (2013–14)

	महीने					योग
	जून	जौलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	
वर्षा मी०मी० में	86.5	292.5	221.8	96.6	19.7	701.1
वर्षा दिवस की संख्या	6	12	21	15	5	59
औसत वर्षा मी०मी० में	65.5	166.2	167.5	132.8	13.9	545.8

जो यह स्पष्ट करता है कि खरीफ सत्र के मध्य वर्षा यद्यपि कम हुई परन्तु उसका वितरण सही रहा। जबकि रबी सत्र के महीनों के सभी महीने शुष्क रहे। केवल सितम्बर एवं फरवरी माह में कुछ वर्षा हुई। सितम्बर एवं फरवरी माह की वर्षा रबी फसल के लिए विशेष महत्त्व रखती है क्योंकि इन महीनों में फसल अपनी पूरी वृद्धि की ओर रहती है। फसल का पूर्ण विकास इन्हीं महीनों में होता है। पूरे वर्ष की अधिकतम वर्षा का 80 प्रतिशत लगभग जौलाई, अगस्त एवं सितम्बर माह में प्राप्त होता है।

सारिणी नं० 2

रबी फसल (2013–14)

	महीने					योग
	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	
वर्षा मी०मी० में	–	36.4	–	18.5	39.5	94.4
वर्षा दिवस की संख्या	–	3	–	2	4	9
औसत वर्षा मी०मी० में	7.5	6.4	21.8	19.9	13.7	69.3

भू–वर्गीकरण

जिस क्षेत्र में पुठा–हुसैनपुर गाँव स्थित है, वहाँ की मिट्टी उपजाऊ दोमट मिट्टी है। गाँव की भूमि का वर्गीकरण उपजाऊ प० एवं उत्पादक क्षमता के आधार पर करने का प्रयास किया गया है। शोधकर्ता ने एक अनुमान द्वारा क्षेत्र में उपयोग की गई प्रत्येक किस्म की भूमि का आँकड़ा सारिणी–3 द्वारा प्रदर्शित किया है। जो कुल क्षेत्र की भूमि का प्रतिशत है।

सारिणी नं० 3
गाँव का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 369 एकड़

भूमि का वर्गीकरण	श्रेणी	क्षेत्रफल एकड़ में	सम्पूर्ण क्षेत्रफल प्रतिशत
उच्च उर्वरा शक्ति वाली	'ए'	130	35.23
मध्य उर्वरा शक्ति वाली	'बी–1'	136	36.85
मध्य उर्वरा शक्ति वाली	'बी–2'	26	07.05
न्यून उर्वरा शक्ति वाली	'सी'	06	01.63
अन्य उपयोग वाली भूमि	–	71	19.24
योग		369	100.00

सारिणी–3 से स्पष्ट है कि लगभग 35 प्रतिशत भूमि उच्च उर्वरा शक्ति वाली है तथा उसमें जल निकासी की उत्तम व्यवस्था है तथा सिंचाई के विभिन्न साधनों का अच्छा प्रबन्ध है। श्रेणी 'ए' की भूमि दोमट एवं उपजाऊ मिट्टी वाली है। इसमें सब्जियों एवं गन्ने की फसल अधिक पैदा की जाती है। इस मिट्टी में दो से तीन फसल तक प्रति वर्ष पैदा की जाती है। सारिणी से यह भी ज्ञात होता है कि मध्य उर्वरा शक्ति वाली यानि बी–1 श्रेणी की भूमि का क्षेत्रफल लगभग 37 प्रतिशत है। जो 136 एकड़ क्षेत्रफल पर फैली है। यह पहले एक फसली जमीन की तथा दूसरी फसल में इसे परती छोड़ दिया जाता था जिससे वह पुनः उर्वरा शक्ति प्राप्त करती थी। परन्तु वर्तमान समय में इस भूमि में रसायनिक खाद की सहायता से एवं ग्रामीण विद्युतीकरण से नलकूप आदि लग जाने से दो फसल ली जाने लगी है। श्रेणी बी–2 की भूमि केवल 26 एकड़ यानि कुल भूमि का लगभग 7 प्रतिशत है। वर्षा ऋतु में इसमें पानी जमा हो जाता है। इस लिए इसमें धान (चावल) की खेती की जाती है। यह मिट्टी चिकनी मिट्टी की तरह है। न्यून उर्वरता शक्ति वाली यानि श्रेणी 'सी' की भूमि बंजर या खारस (रेहयाली) है, जो सम्पूर्ण भूमि का मात्र 1.63 प्रतिशत है। इसे खाली छोड़ दिया जाता है। वर्षा में इस भूमि पर पानी भर जाता है एवं घास उग आती है। इसलिए इस भूमि का उपयोग चरागाह के रूप में किया जाता है।

उत्पादन क्षमता की संकल्पना

स्टाफ महोदय ने भू–उपयोग अध्ययन में उत्पादन क्षमता इकाई पर विचार का सुझाव दिया। यह भू–उपयोग के अध्ययन में उत्तम विचार धारा है। जो विभिन्न प्रकार की भूमि की तुलनात्मक उत्पादन क्षमता का अध्ययन कराती है। यह एक गणित पर आधारित विधि है। इस उद्देश्य के लिए भूमि का किस्म के आधार पर कई श्रेणियों में वर्गीकरण करना होता है। यह वर्गीकरण किसी क्षेत्र की भूमि में विद्यमान उत्पादन दर को उसकी सम्पूर्ण उत्पादन क्षमता का प्रयोग करना है। जिसे पी०पी०यू० (पोटेन्शियल प्रोडक्शन यूनिक्स) कहते हैं।

सारिणी नं० 4
उत्तम प्रबंध वाली भूमि का प्रति एकड़ उत्पादन 1480 कि०

भूमि की किस्म	श्रेणी	क्षेत्रफल एकड़ में	औसत उत्पादन प्रति एकड़ किलो ग्राम में	उत्पादन क्षमता दर (प्रति एकड़)	पी०पी०यू० क्रमांक
अच्छी किस्म की भूमि	'ए'	130	1640	1.86	51.25
मध्यम किस्म भूमि	'बी–1'	136	1280	1.55	39.00
अध्यम किस्म भूमि	'बी–2'	26	1010	0.84	11.10
कम उपजाऊ भूमि	'सी'	06	–	–	–
योग		298	–	–	101.35

सारिणी–4 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि गाँव की 298 एकड़ भूमि 101.33 पी०पी० यूनिक्स के बराबर है। इससे यह स्पष्ट होता है कि गाँव की भूमि की उत्पादन क्षमता उत्तम प्रबंध वाली भूमि की उर्वरा क्षमता से

कम नहीं है। पी०पी०यू० की इतनी उच्च (1.86) गुणवत्ता भूमि की अच्छी किस्म का होना है। जो वर्ष में दो फसलों का उत्पादन करती है। बी–1 किस्म की भूमि 136 एकड़ का क्षेत्र घेरती है। जब इसकी उत्पादन क्षमता 36 एकड़ भूमि के बराबर है। जो भूमि उत्तम प्रबंध की है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान में गाँव की भूमि का वैज्ञानिक तरीके से उपयोग नहीं हो रहा है। जबकि बी–1 किस्म की भूमि का वैज्ञानिक आधार पर एवं अच्छे प्रबंध वाली भूमि की तरह से प्रयोग किया जाय, तो यह भूमि भी 'ए' श्रेणी की भूमि के समान पैदा हो सकती है। ऐसा करने के लिए 'बी' श्रेणी की भूमि में पर्याप्त मात्रा में खाद, जल व्यवस्था, नवीन कृषि यन्त्रों का उपयोग, आधुनिक कृषि फार्म के तरीकों को अपनाना होगा। इस गाँव 6 एकड़ भूमि ऐसी भी है जो कृषि की दृष्टि से अनुपयोगी है एवं उसकी उत्पादकता शून्य है। आधुनिक तरीकों के आधार पर इस भूमि को भी उपयोगी बनाया जा सकता है।

सिंचाई के साधनः–

इस क्षेत्र में सिंचाई का मुख्य साधन नहर है। परन्तु विद्युत के आने से ट्यूबवैल्स को भी काफी प्रोत्साहन मिला है एवं नहरों से सिंचित भूमि में भी ट्यूबवैल से सिंचाई की जाने लगी है। गाँव में 14 ट्यूबवैल्स हैं, जो गाँव की सम्पूर्ण भूमि की सिंचाई करती है। नहर का पानी चीला तलहट मिट्टी के क्षेत्र में सिंचाई करती है। सन् 2007 में खरीफ फसल में पहले तीन महीनों में ही वर्षा हुई और वह भी कम मात्रा में। जिसकी मात्रा 462 मी०मी० थी, जो पर्याप्त नहीं थी तथा खरीफ फसल की देरी से पकने वाली फसलों के लिए हानिकारक रही इनमें मुख्य रूप से सब्जियां, गन्ना एवं आरोपण किया गया धान था, जिनकी पूर्ति ट्यूबवैल आदि से की गई।

अध्ययन क्षेत्र में सब्जियों एवं धान की सिंचाई मुख्य रूप से ट्यूबवैलों द्वारा की जाती है। क्योंकि कभी–कभी नहर सफाई के लिए बन्द कर दी जाती है उस समय सब्जियों में एवं धान की फसल में जो पानी की आवश्यकता होती है, उसकी पूर्ति ट्यूबवैल ही करती है। सन् 2015–16 में रबी की फसल में पर्याप्त वर्षा न हुई, जिसकी वजह से चने की फसल को छोड़कर शेष फसलें पलेवा करने पर ही बोई जा सकी। रबी की फसल में गेहूँ की नई–नई किस्में आ जाने से, उत्तम सिंचाई की व्यवस्था चाहिए, क्योंकि नई–नई किस्में पैदा करने के समय, बोने से पकने तक 5–6 बार सिंचाई चाहती है। इसमें यदि पानी की मात्रा में कमी आती है तो अच्छी फसल पैदा होने की आशा नहीं रहती।

भू–उपयोगः–

सारिणी–5 सम्पूर्ण गाँव की भूमि का उपयोग प्रदर्शित करती है। इसमें सम्पूर्ण भू–उपयोग का प्रतिशत भी प्रदर्शित किया गया है। सारिणी–5 से विदित होता है कि गाँव की सम्पूर्ण कृषि योग्य भूमि का 79 प्रतिशत भाग कृषि आधीन है तथा 9.21 प्रतिशत क्षेत्र पर झाड़ आदि खड़े हैं, जो गाँव की जनता को ईंधन के काम देते हैं। ऐसी भूमि पर आम एवं अमरूद के बाग भी लगाये गये हैं। शोध कार्य काल में शोधकर्ता को पता चला कि गाँव में परती भूमि काफी मात्रा में थी, लेकिन वर्तमान में उसे कृषि योग्य बनाकर उसमें धान की खेती की जा रही है। लगभग 10 प्रतिशत गाँव की भूमि ऐसी है, जो आवासीयण कच्ची सड़कों, नहर एवं कुवें तथा शमशान एवं कब्रिस्तान के रूप में प्रयोग की गई है।

सारिणी नं० 5

गाँव का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 369 एकड़

भू–उपयोग	क्षेत्रफल एकड़ में	कुल क्षेत्रफल का प्रतिशत
कृषि भूमि	292	79.14
बंजर भूमि	06	1.62
झाड़–झंकाड से ढकी भूमि	34	9.21
आवाससधीन भूमि	18	4.88
कच्चे एवं पक्के रास्ते	08	2.17
नहर, कुवें एवं अन्य	10	2.71
कब्रिस्तान	01	0.27
योग	369	100.00

उपरोक्त सारिणी गाँव की भूमि के उपयोग का मद्वार स्पष्ट निरूपण करती है।

खरीफ फसल में भू–उपयोग

खरीफ फसल में भूमि पर बोई गई फसलों का वितरण एवं अन्य कार्यों में उपयोग की गई भूमि को सारिणी–6 द्वारा प्रदर्शित किया गया है इसके साथ–साथ सम्पूर्ण कृषि की जाने वाली भूमि पर बोई गई अलग–अलग फसलों का प्रतिशत अन्तर्गत भूमि का 32.57 प्रतिशत भाग ऐसा है, जहाँ खरीफ में अनाज बोया जाता है। 59.93 प्रतिशत भाग पर अनाज के अतिरिक्त अन्य फसलें बोई जाती हैं। 7.53 प्रतिशत भाग परती छोड़ दिया जाता है। खाद्यान्न वाली फसलें 35.18 प्रतिशत भाग पर बोई जाती है (यह क्षेत्र खरीफ फसल का है) बाकी 64.82 प्रतिशत भाग बच जाता है। खाद्यान्न की दृष्टि से खेती दो क्रमों में की जाती है। पहली, खरीफ की फसल में बोये गये खाद्यान्न उसे भी रबी की फसल पकने एवं गहाने तक उसे बनाज उपलब्ध कराती है। दूसरे, किसानों को खाद्यान्न उगाने के लिए मजबूर करती है, ताकि वह कृषि भूमि पर आश्रित होने की वजह से अपने एवं अपने परिवार के भरण–पोषण हेतु खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ा सके। खरीफ में कुछ भूमि परती छोड़ दी जाती है, यह वह भूमि है जिसकी उर्वता शक्ति कम है तथा खाली छोड़े गये समय में यह अपनी उर्वरा शक्ति की पूर्ति कर लेती है तो इसमें रबी की फसल बोई जाती है।

खरीफ फसल में मक्का इस क्षेत्र में अधिक बोई जाती है जो यहाँ के निवासियों का मुख्य भोजन है। निचले क्षेत्रों में जहाँ पानी भर जाता है वहाँ धान (चावल) की खेती की जाती है। यह सम्पूर्ण भूमि के 8.8 9 प्रतिशत भाग पर बोई जाती है। धान जल्दी कटने पर उस भूमि पर उर्द या मूंग बो दी जाती है, लेकिन यह केवल 0.74 प्रतिशत भाग पर ही बोई जाती है। खाद्यान्न के अतिरिक्त खरीफ की फसल में गन्ना बोई गई भूमि के एक बड़े भाग पर बोया जाता है। इसके बाद चारे का दूसरा स्थान है। ढैन्चा भी काफी क्षेत्र में बोया जाता है तथा सूरजमुखी की खेती भी खरीफ फसल में ही की जाती है। अखाद्यान्न फसलें 8.99 प्रतिशत भाग पर बोई जाती हैं। इस फसल समय में सब्जियां 8.15 प्रतिशत भाग पर, मिर्चें 5.93 प्रतिशत भाग पर, कपास केवल 1.49 प्रतिशत भाग पर। कपास पूर्णतया कैश क्राप है, जो हापुड़ शहर को निर्यात कर दी जाती है। यहाँ से सब्जियां गाज़ियाबाद एवं शाहदरा (दिल्ली) को निर्यात की जाती हैं। गन्ना एवं आरोपण किया गया धान, उत्तम उपजाऊ भूमि में बोया जाता है। सब्जियों के लिए भी उत्तम एवं उपजाऊ भूमि ही अनुकूल रहती है।

सारिणी नं० 6
कुल कृषि योग्य भूमि 292 एकड़
खरीफ फसल में बोई गई भूमि 270 एकड़

फसलें	क्षेत्रफल एकड़ में	कुल कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत	कुल बोई गई भूमि का प्रतिशत	कुल कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत	कुल बोई गई भूमि का प्रतिशत
खाद्यान्न फसलें				32.54	35.18
मक्का	69	23.63	25.55		
चावल	24	8.21	8.89		
दालें (उर्द व मूंग)	02	0.70	0.74		
अन्य फसलें				59.93	64.82
गन्ना	38	13.00	14.07		
चारा	37	12.66	13.33		
ढैन्चा	35	12.00	12.96		
सूरजमुखी	23	7.87	8.89		
सब्जियां	22	7.53	8.15		
मिर्च	16	4.47	5.93		
कपास	04	1.40	1.49		
परती भूमि	22	7.53	–	7.53	–
योग	292	100.00	100.00	100.00	100.00

रबी फसल में भू–उपयोग:

इस फसल में सम्पूर्ण कृषि योग्य भूमि पर बोई गई प्रत्येक फसल का क्षेत्र एवं कुल भूमि में बोई गई फसल का अलग–अलग प्रतिशत का सारांश सारिणी–7 में प्रदर्शित किया गया है। रबी की फसल में 98.63 प्रतिशत कृषि भाग पर फसल बोई गई। सन् 2015–16 कोई भी भूमि परती नहीं छोड़ी गई। कुछ भूमि ऐसी जरूर थी जिस पर खरीफ में बोई गई फसल अवश्य खड़ी थी। रबी में 48.61 प्रतिशत भूमि पर खाद्यान्न बोये गये। जिनमें गेहूं की बुवाई सबसे अधिक क्षेत्र में की गई। अकेले गेहूं की बुवाई कुल बोई गई भूमि के 42.36 प्रतिशत भाग पर की गई। अन्य खाद्यान्नों में मटर, चना, सरसों आदि बोये गये। खरीफ की फसल के रूप में गन्ने की ऐसी फसल भी जो पहले से बोई गई थी। यह हापुड़ शहर के बहुत नजदीक है इसलिए यहाँ बाग लगाना बहुत उपयुक्त है, क्योंकि जमीन तो उपजाऊ है ही साथ में सिंचाई बहुत उत्तम सुविधा है। फलों की फसल अधिक नकद पैदा देने वाली है, एवं हापुड शहर बाजार के रूप में संलग्न है। यहाँ पर रबी की फसल में आलू की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। जो लगभग 137 एकड़ जमीन पर बोया जाता है। गेहूं की नई–नई प्रजातियां भी ऊँचे पैमाने पर बोई जाती है नई प्रजातियों को बोने से लेकर पकने तक 5–6 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है तथा इस क्षेत्र में सिंचाई के साधनों की पर्याप्त सुविधा है। इसलिए नई किस्म का गेहूं भी बड़ी मात्रा में पैदा किया जाता है।

सारिणी नं० 7
कुल कृषि योग्य भूमि 292 एकड़
रबी फसल के अन्तर्गत बोई गई भूमि 288 एकड़

फसलें	क्षेत्रफल एकड़ में	कुल कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत	कुल बोई गई भूमि का प्रतिशत	कुल कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत	कुल बोई गई भूमि का प्रतिशत
खाद्यान्न फसलें				47.95	48.61
गेहूं	122	41.78	42.36		
मटर	12	4.12	4.17		
चना	04	1.37	1.39		
सरसो	02	0.66	0.69		
अन्य फसलें				50.57	51.39
आलू	137	46.92	47.57		
सब्जियां	06	2.05	2.05		
चारा	05	1.71	1.74		
खरीफ में बोई गई फसलें					
बन्ना	04	1.37	–	1.37	–
परती भूमि	–	–	–	–	–
योग	292	100.00	100.00	100.00	100.00

गेहूं रबी की फसल का मुख्य खाद्यान्न है। इस समय सम्पूर्ण कृषि योग्य भूमि में फसलें बोई जाती हैं। अच्छी एवं नई प्रजातियों के उच्च उत्पादन एवं अच्छे भाव अन्य खाद्यान्नों की अपेक्षा गेहूं की पैदावार को आमंत्रित करती है तथा जौ एवं चने की भी पैदावार का क्षेत्र धीरे–धीरे कम हो रहा है। खरीफ की फसल के बार जुताई करके, रबी की फसल की तैयारी की जाती है। इस समय वर्षा का होना रबी की फसल की तैयारी के लिए उपर्युक्त रहता है, क्योंकि वर्षा होने से खेतों की जुताई करके बुवाई के लिए खेत तैयार कर लिये जाते हैं। वर्षा न होने पर खेतों में पानी देकर जुताई की जाती है, इस महीने में मिट्टी में नमी की मात्रा कम हो जाती है, मिट्टी सूख जाती है और वह जुताई करने योग्य नहीं रहती। अतः पानी लगाने की आवश्यकता होती है। सितम्बर माह के अन्त में या अक्टूबर माह

के शुरू में वर्षा होने से गेहूं की बुवाई के लिए सुगमता से तैयारी कर ली जाती है। इस समय की वर्षा गेहूं की फसल के लिए बहुत लाभदायक रहती है।

जायद (अधिक) की फसल में भू–उपयोगः–

सारिणी–8 में दी गई सभी फसलें जायद की फसल में पैदा की जाती है। इस फसल में भी खरीफ की फसल में बोई गई मक्का का क्षेत्रफल सबसे अधिक होता है। यह लगभग 37.61 एकड़ क्षेत्र को घेरती है। इसके बाद दालों वाली फसलें महत्वपूर्ण है। जो लगभग 9.4 प्रतिशत क्षेत्र (कुल बोई गई भूमि का) घेरती है। जायद की फसल में मक्का उपजाऊ भूमि पर बोई जाती है, जबकि दलहन वाली फसलें बलुई मिट्टी पर पैदा की जाती है।

सारिणी नं० 8
कुल कृषि योग्य भूमि 292 एकड़
जायद फसल में बोई गई भूमि 0.117 एकड़

फसलें	क्षेत्रफल एकड़ में	कुल कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत	कुल बोई गई भूमि का प्रतिशत	कुल कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत	कुल बोई गई भूमि का प्रतिशत
खाद्यान्न फसलें				18.84	47.01
मक्का	44	15.07	37.61		
दलहन	11	3.77	9.40		
अन्य फसलें				21.23	52.99
खीरा	12	4.11	10.26		
खरबूजा–तरबूज	11	3.77	9.40		
आलू	05	1.71	4.27		
प्याज	02	0.69	1.71		
चारा	02	0.68	1.71		
अन्य सब्जियां	30	10.27	25.64		
खरीफ में बोई फसलें	04	1.37	–	1.37	
रबी में बोई फसलें	171	58.56	–	58.56	
योग	292	100.00	100.00	100.00	100.00

अखाद्यान्न फसलों में टमाटर, बैंगन, कद्दू आदि प्रथम स्थान पर हैं। जो 25.64 प्रतिशत कृषि योग्य भू–भाग पर बोई जाती है। द्वितीय स्थान पर कद्दू (घीया) एवं तृतीय स्थान पर खरबूजा एवं तरबूज है, जो कुल बोई गई भूमि के क्रमशः 12.26 प्रतिशत एवं 9.4 भाग पर पैदा की जाती है। इनके अतिरिक्त आलू, प्याज एवं पशुओं के लिए चारा भी बोते हैं। गाँव में सब्जी की खेती के लिए मिट्टी, खाद, सिंचाई के साधन की उचित एवं अनुकूल व्यवस्था है।

निष्कर्ष

शोध कार्य में खाद्य पदार्थों के योजनाबद्ध एवं सन्तोषजनक चयन के सिद्धान्तों, उत्तम विचारों पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। भोज्य पदार्थों के जो पोषक तत्त्व उपलब्ध होते हैं, उसके महत्त्व की सूचना भी दी गई है। पोषक तत्त्वों के विशेषज्ञों द्वारा संस्तुत किये गये पौष्टिक आहार पर भी दृष्टिपात किया गया है। जीवन के विभिन्न स्तरों के मनुष्यों को एवं विभिन्न लिंग वालों को सन्तोषजनक पौष्टिक आहार की आवश्यकता का भी ज्ञान कराया गया है। शोध कार्य के निष्कर्ष में शोध क्षेत्र के गाँवों में ली जाने वाली परम्परागत आहार में जो पोषक तत्त्वों की कमियां मिली हैं उन्हें दूर कर वर्तमान में प्रयोग किये जाने वाले पौष्टिक आहार का प्रचलन बढ़ाने का सुझाव दिया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता प्राची (2013) पूर्वी तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कृषि विकास का तुलनात्मक अध्ययन, पी0एच0डी0 थिसीस, वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
2. उत्तर प्रदेश की आर्थिक समीक्षा अर्थ एवं संख्या प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान उत्तर प्रदेश– 2010–11
3. मिश्र जे0पी0 भारतीय अर्थव्यवस्था, मिश्रा ट्रेडिंग कारपोरेशन, वाराणसी–2003
4. Benerjee, Smriti Regional imbalances in agricultural development in U.P., Sadhu Publication, Varanasi, 1986.
5. Jain, S.C. Agricultural policy in India, Allied Publishers Pvt. Ltd. Bombay, 1967.
6. Mellor, J.W. The Economics of agricultural development, Cornell University Press, 1967.
7. Nag, D.S. Problems of under developed Economies, Laxmi Narayan Agrawal, Educational Publishers, Agra, 1962.
8. Draft six five year plan Vol.II, Uttar Pradesh (Planning Commission Uttar Pradesh)
9. Nag, D.S. Problems of under developed Economies, Laxmi Narayan Agrawal, Educational Publishers, Agra, 1962.
10. Rai Chaudhary, S.P. Soils of India, National book trust New Delhi, 1962.
11. Sharma, J.P. Agriculture in developing Economies, Pratisha Publications, 1986